अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : ग्यारहवीं – जैन सिद्धान्त रत्नाकर (परीक्षा 30 जून, 2013)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	32	28	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1=(10)**

(a) तप से जीव को क्या प्राप्त होता है -

(क) अज्ञान क्षय (ख) अनाश्रवपन

(ग) वीतरागता (घ) व्यवदान ( )

(b) जीव निर्विकारता को प्राप्त करता है -

(क) मणगुत्तयाए (ख) वयगुत्तयाए

(ग) कायगुत्तयाए (घ) खंतीए ( )

(c) जीव किससे सावद्य योग से विरति प्राप्त करता है -

(क) सामायिक (ख) स्वाध्याय

(ग) प्रत्याख्यान (घ) वन्दना ( )

(d) मार्दव प्राप्ति का साधन है -

(क) क्रोध-विजय (ख) मान-विजय

(ग) माया-विजय (घ) लोभ-विजय ( )

(e) मनोगुप्ति भावना है -

(क) सत्यव्रत की (ख) अस्तेय व्रत की

(ग) अहिंसा व्रत की (घ) ब्रह्मचर्य व्रत की ( )

(f) अनन्तानुबन्धी कषाय का बन्ध होता है -

(क) तीसरे गुणस्थान तक (ख) दूसरे गुणस्थान तक

(ग) नवें गुणस्थान तक (घ) पाँचवें गुणस्थान तक ( )

(g) प्रमत्त विरत गुणस्थान में बन्ध योग्य प्रकृतियां हैं -

(क) 81 (ख) 87

(ग) 63 (घ) 58 ( )

(h) बिना देखी बिना पूंजी भूमि पर शरीर आदि रखने से लगने वाली क्रिया है -

(क) अनाभोग क्रिया (ख) विदारण क्रिया

(ग) ईर्यावहिया क्रिया (घ) आनयन क्रिया ( )

(i) उकारान्त स्त्रीलिंग शब्द है -

(क) साहु (ख) धेणु

(ग) वाउ (घ) भाणु ( )

(j) अजीव अधिकरण के भेद हैं -

(क) 04 (ख) 05

(ग) 11 (घ) 10 ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1=(10)

(a) गर्हणा से जीव चार घाति कर्मो का नाश करता है। ( )

(b) क्षमापना से जीव आह्लाद भाव को प्राप्त करता है। ( )

(c) दर्शन सम्पन्नता से जीव शैलेशी अवस्था को प्राप्त करता है। ( )

(d) कायगुप्ति से साधक संवर की प्राप्ति करता है। ( )

(e) 10 से 14 वें गुणस्थानवर्ती आत्माएँ अकषायी हैं। ( )

(f) साम्परायिक कर्माश्रव के 39 भेद हैं। ( )

(g) अन्तराय कर्म का उदय दसवें गुणस्थान तक होता है। ( )

(h) ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें गुणस्थान में बन्ध का कारण कषाय नहीं है। ( )

(i) 'चमू ' शब्द का अर्थ 'सेना ' है। ( )

(j) विक्रम की 18 वीं शती के अन्त में स्थानकवासी नाम पड़ा। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- 10x1=(10)

(a) मुझसे जीव परीषहों को जीतता है। .....

(b) मैं विषयों के प्रति अनुत्सुकता से उत्पन्न होती हूँ। .....

(c) मैं जीव को सभी भावों का ज्ञान कराती हूँ। .....

(d) मैं प्रवचन की प्रभावना करती हूँ। .....

(e) स्पर्श, रस, गंध, रूप व शब्द में समभाव रखना, ये मेरी पाँच भावनाएँ हैं। .....

(f) मैं तीन गुणों से संयुक्त हूँ। .....

(g) मैं वह सीढ़ी हूँ जो सदा ऊपर की ओर ही चढ़ाती हूँ। .....

(h) मैं संयमघाती पाप क्रियाओं का त्याग नहीं करने देती हूँ। .....

(i) वीर नि. 1000 के बाद का कोई ग्रन्थ मेरे रूप में मान्य नहीं है। .....

(j) मुझको प्राकृत में 'सही' कहते हैं। .....

प्र.4 प्रश्न एवं उत्तर दोनों क्रम से नहीं दिये हुए हैं, आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए :- **10x1=(10)**

(a)	स्वाध्याय	-	धर्म श्रद्धा	.....
(b)	सर्वगुण सम्पन्नता	-	भाव विशुद्धि	.....
(c)	संवेग	-	पूजा करना	.....
(d)	भावसच्चे	-	ईर्यावहिया क्रिया	.....
(e)	अच्च	-	अपुणरावित्तिं	.....
(f)	तीसरा गुणस्थान	-	निर्जरा	.....
(g)	ग्यारहवाँ गुणस्थान	-	147 प्रकृतियों की सत्ता	.....
(h)	विसंयोजना	-	जिनेश्वर सूरि	.....
(i)	वर्धमान सूरि	-	60 प्रकृति का उदय	.....
(j)	दसवाँ गुणस्थान	-	अनन्तानुबन्धी	.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए :- **16x2=(32)**

(a) **संतोष गुण जीव किससे प्राप्त करता है ?**

.....

(b) **वीतरागता से जीव किस गुण को प्राप्त करता है ?**

.....

(c) **कषाय प्रत्याख्यान से जीव किस गुण को प्राप्त करता है ?**

.....

(d) **साधक अनिवृत्ति रूप शुक्लध्यान के चतुर्थ भेद की प्राप्ति किसके प्रत्याख्यान से करता है ?**

.....

(e) **मैत्री और माध्यस्थ भावना के विषय क्या-क्या हैं ?**

.....

(f) **'कांक्षा ' से क्या तात्पर्य है ?**

.....

(g) **दूसरे गुणस्थान में उदय नहीं होने वाली प्रकृतियों के नाम लिखिए।**

.....

(h) उपशम श्रेणि में कौनसी 6 प्रकृतियों की सत्ता नहीं होती ?

.....

(i) चौथे गुणस्थान के अन्त में बन्ध-विच्छेद होने वाली 10 प्रकृतियों के नाम लिखिए।

.....

.....

(j) 1 से 9 गुणस्थान तक कषाय के बारे में क्या नियम हैं ?

.....

.....

(k) निम्न वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद कीजिए -

1. मैं बालक को फल देता हूँ। .....

2. महल से लड़की गिरी। .....

(l) निम्न वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए -

1. सो मोक्खाय हरिं भजइ। .....

2. मम पुत्तो पावत्तो दुगुंच्छइ। .....

(m) 'साहु ' शब्द की द्वितीया तथा पंचमी विभक्ति के रूप लिखिए।

.....

.....

(n) भगवान महावीर की विशुद्ध परम्परा किन-किन नामों से पुकारी गई है ?

.....

.....

(o) आगम में कौनसे तीन द्रव्य तीर्थों के नामों का उल्लेख है।

.....

.....

(p) आचारांग में वस्त्रों के बारे में क्या विधान है ?

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में दीजिए :- **7x4=(28)**

(a) **निम्न का अन्यवार्थ लिखिए :-**

धम्मकहाए णं णिज्जरं जणयइ। धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ। पवयणं पभावे णं जीवे आगमिसस्स भद्दत्ताए कम्मं निबंधइ।

.....

.....

.....

.....

(b) **अन्यवार्थ लिखिए :-**

उवहि पच्चक्खाणेणं अपलिमंथं जणयइ। निरूवहिएण जीवे निक्कंखे उवहिमन्तरेण य न संकिलिस्सइ।

.....

.....

.....

.....

(c) **अन्यवार्थ लिखिए :-**

मणसमाहारणयाए णं एगग्गं जणयइ। एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ। नाणपज्जवे सम्मत्तं च विसोहेइ, मिच्छत्तं च निज्जरेइ।

.....

.....

.....

.....

(d) **अन्यवार्थ लिखिए :-**

दंसण सम्पन्नयाए णं भवमिच्छत्तछेयणं करेइ। परं न विज्झायइ। परं अविज्झाएमाणे अणुत्तरेण नाण-दंसणेण अप्पाणं संजोएमाणे, सम्मं भावेमाणे विहरइ।

.....

.....

.....

.....

(e) **दान के चार अंग कौनसे हैं ?**

.....

.....

.....

.....

(f) **दुष्प्रणिधान का क्या आशय है ?**

.....

.....

.....

.....

(g) **चौदहवें गुणस्थान के अन्तिम समय में कितनी प्रकृतियों की सत्ता रहती हैं ?सत्ता में रहने वाली प्रकृतियों के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

.....